रश्मिरथी में चित्रित समाज और कर्ण का चरित्र

बी. ए. अनिवार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी (अहिन्दी-भाषी छात्रों के लिए)

डॉ. बिभा कुमारी, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर (ल. ना. मि. वि. वि.)

रश्मिरथी की रचना कवि रामधारी सिंह दिनकर ने की। यह खंडकाव्य 1952 में प्रकाशित हुआ था। इसमें सात सर्ग हैं। इसमें कर्ण के चरित्र के सभी पक्षों को सूक्ष्मता से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। इसकी कथा यद्यपि महाभारत पर आधारित है तथापि इसमें कवि ने कुछ परिवर्तन भी किए हैं। कर्ण के चरित्र को कवि ने उदात्त स्वरूप प्रदान किया है। महाभारत की कथा से उसके चरित्र को ऊपर उठाकर उसे नैतिकता और विश्वसनीयता के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है। कर्ण के चरित्र को कवि ने आधुनिक दृष्टि से देखा और गधा है, सचमुच उसका चरित्र अत्यंत गौरवपूर्ण रूप में चित्रित किया गया है। इस खंडकाव्य में व्यक्ति और उसके समूचे परिवेश को चित्रित किया गया है। एक व्यक्ति के गुण-स्वभाव के निर्माण में समूचे परिवेश की भूमिका होती है। समाज उसके जन्म से लेकर जीवन के आखिरी क्षणों तक उसे एक वातावरण प्रदान करता है, जिसमें उसके चरित्र का निर्माण एवं विकास होता है।

प्रस्तुत खंडकाव्य में कवि ने समस्त पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को नई दृष्टि से देखने-परखने की कोशिश की है। गुरु-आश्रम में किसी शूद्र का प्रवेश कितना कठिन है, लगभग असंभव ही है, इस कटु-सत्य की ओर भी कवि ने पाठकों का ध्यान खींचा है। समाज में स्त्रियों की दयनीय और उपेक्षापूर्ण स्थिति पर भी कवि की दृष्टि गई है। एक तरफ अविवाहित स्त्री के मातृत्व को लेकर इतनी निंदा है कि एक अविवाहित माता अपने शिशु का त्याग करने के लिए विवश हो जाती है तो दूसरी तरफ भरी सभा में स्त्री का चीर-हरण कर उसका घोर अपमान किया जाता है। स्त्रियों के प्रति समाज की संकीर्ण सोच तथा शूद्रों के प्रति अन्यायपूर्ण व्यवहार की ओर कवि विशेष रूप से दृष्टि डालते हैं। शूद्रों की योग्यता के प्रति समाज का अनदेखापन 'रश्मिरथी' में सजीवता से चित्रित किया गया है। धर्मयुद्ध में भी धर्म को छोड़ देना, स्वार्थपरता में लीन हो जाना इत्यादि प्रसंगों को भी कवि ने जीवंत किया है। किसी भी व्यक्ति की योग्यता को निष्पक्षता के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए। योग्यता को जन्म से जोड़ना या जन्म को वैधता-अवैधता से जोड़ना कवि की दृष्टि में अत्यधिक अन्यायपूर्ण है। किसी भी व्यक्ति की योग्यता का निर्धारण और मूल्यांकन उसके कर्म से किया जाना चाहिए न कि उसके जन्म से। आधुनिक साहित्य के आरंभिक चरण के नवजागरण, प्रगतिवाद के वंचितों के हित समर्थन, नवलेखन साहित्य के लघुमानव को केंद्र में प्रतिष्ठित करने की भावना को रश्मिरथी में देखा जा सकता है।

आगे चलकर जिस अस्मितामूलक साहित्य का आरंभ हुआ उसकी जड़ें रश्मिरथी में देखी जा सकती है। हिंदी के छात्रों, अध्यापकों के साथ-साथ हिंदी के सामान्य पाठक भी दिनकर की ओजपूर्ण कविता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। दिनकर की रचनाओं ने पाठकों में नई रुचि एवं नए प्रकार के उत्साह को संचरित किया। वे अन्याय का विरोध करते दिखाई देते हैं। समाज में उच्च-वर्ग द्वारा संस्थागत किए जा चुके अन्याय के विरुद्ध कर्ण के चरित्र को सशक्त रूप में खड़ा करके कवि एक नए समाज की स्थापना की ओर संकेत करते हैं। अन्याय के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति कर्ण के माध्यम से हुई है, कर्ण एक ऐसा नायक है जो उदात्त चरित्र और पराक्रमी है परंतु समाज उसके साथ न्याय नहीं करता है। उसकी योग्यता और क्षमता की निरंतर उपेक्षा करता है, दिनकर ने रश्मिरथी के केंद्र में कर्ण को खड़ा किया है। महाभारत की कथा के विविध प्रसंगों को आधुनिक दृष्टि से देखा-परखा और व्याख्यायित किया है। दिनकर की रचनाएँ ओजपूर्ण होती हैं। वीर-चरित्रों को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में दिनकर सिद्धस्त हैं। अतः कर्ण के चरित्र को भी वे साकार रूप प्रदान कर पाए हैं।

वर्ण-व्यवस्था वैयक्तिकता का निषेध करती है। दिनकर 'रश्मिरथी' में कर्ण के संघर्ष को वर्णव्यवस्था की कठोर व कटु सच्चाई के विरुद्ध चित्रित करते हैं। कर्ण में एक महान योद्धा बनने के समस्त गुण होने पर भी उसे गुरु के आश्रम में प्रवेश नहीं मिलता है। जब द्रोणाचार्य उसे शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं करते हैं तो वे उसके महान योद्धा बनने की सारी संभावनाओं को लगभग समाप्त कर देते हैं। कर्ण का चरित्र इतना धीर है कि वह हार नहीं मानता है, वह गुरु परशुराम के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करने जाता है, वह अपने वास्तविक परिचय को छुपा कर शिक्षा तो प्राप्त कर लेता है परंतु गुरु द्वारा वास्तविकता जान लेने पर उसे गुरु के शाप का भाजन बनना पड़ा। वर्ण-व्यवस्था के क्रूर सत्य के समक्ष कर्ण का असत्य कोई बहुत बड़ा अपराध नहीं था, शिक्षा पाने के लिए विवश होकर उसे असत्य का सहारा लेना पड़ा था, उसकी विवशता को समझने की कोशिश किसी ने नहीं की। 'रश्मिरथी' के माध्यम से कवि ने समाज कि परिधि पर स्थित लोगों को एक दिशा दी है, साहस दिया है, समाज में उसकी उपस्थिति एवं योग्यता को महत्व दिया है। यह खंडकाव्य समाज में सकारात्मक परिवर्तन की शुरुआत की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है। स्वयं दिनकर के शब्दों में-

"आगे मनुष्य केवल उसी पद का अधिकारी होगा जो उसके सामर्थ्य से सूचित होता है, उस पद का नहीं जो उसके मटा-पिता या वंश की देन है।"

कर्ण की क्षमता और योग्यता को सदैव अपमानित किया गया। उसका दलित आत्मगौरव निम्नलिखित पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है-

"तूने जो- जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ।

चाहे तो कुछ नई कलाएं भी सिखला सकता हूँ।।”

इन पंक्तियों के माध्यम से कर्ण अर्जुन को तो चुनौती देते ही हैं, साथ ही समाज की सम्पूर्ण व्यवस्था के जड़ प्रतिमानों को भी चुनौती देते हैं। समज में व्यक्ति को उसकी वैयक्तिकता, उसकी योग्यता के साथ न स्वीकार कर उसे उसकी जाती के आधार पर उपेक्षित किया जाता है। कृपाचार्य द्वारा जब कर्ण का जातीय परिचय पूछा जाता है तब कर्ण का संयम टूट जाता है और उसका संचित आक्रोश फूट पड़ता है। -

“जाति-जाति रटते, जिनकी पूँजी केवल पाखंड।

मैं क्या जानूँ जाति? जाती हैं ये मेरे भुजदंड।।”

दिनकर मानवतावाद के समर्थक थे।

दिनकर ने कर्ण के चरित्र को सजीव करके समाज में नवीन जीवन-मूल्यों की स्थापना करने का प्रयास किया है।